



ग्रामोभ्युदयादेव देशोभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर-263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बर: 05944-233032



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्ष: 25 अंक: 51 बुलेटिन अवधि: 02 – 06 नवम्बर 2016 दिन: मंगलवार दिनांक: 01 नवम्बर 2016

मौसम पूर्वानुमान:

भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली द्वारा पूर्वानुमानित तथा मौसम केन्द्र, देहरादून द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :-

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	02-11-2016	03-11-2016	04-11-2016	05-11-2016	06-11-2016
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	21	21	21	20	20
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	09	09	08	08	08
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	साफ	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	80	80	85	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	40	40	45	45
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	04	04	04	06	06
वायु की दिशा	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्ध:

- ❖ रबी फसलों की बुवाई हेतु खेत तैयार करें।
- ❖ गेहूँ की जल्दी बोने वाली किस्मों की बुवाई करें।
- ❖ फसलों की बुवाई से पूर्व बीज उपचार अवश्य करें।
- ❖ गेहूँ के बीज का उपचार कार्बोक्सिन 2ग्राम/किग्रा से या टेबूकुनाजोल 1.5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से करें।
- ❖ दलहनी फसलों हेतु थीरम 2 ग्राम + कार्बन्डाजीन 1 ग्राम/किग्रा बीज तथा तिलहनी फसलों में मैटालेक्जिल 6 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करें।
- ❖ जिन किसान भाईयों कि धान की फसल कट गई है उसकी मड़ाई करें।
- ❖ भण्डारण के लिए धान को काटकर अच्छी प्रकार सुखा लें ताकि उसमें नमी की मात्रा 12-14 प्रतिशत तक आ जाएं।

उद्यान प्रबन्ध:

- ❖ सेब एवं अन्य गुठलीदार फल पौधों को आगामी शीतऋतु में रोपण हेतु लेआउट तथा गद्दों की खुदाई का काम प्रारंभ करें।

- ❖ पॉलीहाउस के भीतर व बाहर यदि सब्जी राई का प्रतिरोपण किया गया हो तथा पत्ते बिक्री हेतु तैयार हैं तो उन्हें बाजार में बेचें। तदपश्चात् सिंचाई करें। सिंचाई के 1-2 दिन पश्चात् जब भूमि में नमी हो तो सायंकाल में यूरिया की टॉप ड्रेसिंग हल्की मात्रा में करें।
- ❖ सिंचित घाटी क्षेत्रों में यदि राई की पौध प्रतिरोपण हेतु तैयार है तो पॉलीहाउस या बाहर के वातावरण में उसका प्रतिरोपण 50ग40 से0मी0 फासलें पर करें।
- ❖ मटर को तना मक्खी के प्रकोप से बचाने के लिए कार्बोफ्यूरोन 3 सी0जी0, 25 कि0ग्रा0 / है0 की दर से बुवाई के समय खाद व बीज के साथ जमीन में डालें।
- ❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्द्रानिलिप्रोले 18.5 एच0सी0, 150मि0ली0 / है0 या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एच0सी0, 500मि0ली0 / है0 की दर से प्रयोग करें।
- ❖ टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्द्रानिलिप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0 / है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम / है0 की दर से प्रयोग करें।
- ❖ किसी भी कीटनाशी रसायन का एक बार से ज्यादा प्रयोग न करें।
- ❖ फासबीन की फसल में पौधे सूखने की समस्या के समाधान हेतु कार्बन्डाजिन 1 ग्राम / लीटर पानी या ट्राईकोडर्मा 6-10 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ों की सिंचाई करें।

पशुपालन प्रबन्ध:

- ❖ जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नहीं लगे हैं उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उससे लगातार आपको सही उत्पादन प्राप्त होता रहे।
- ❖ खुरपका मुखपका के लक्षण— आँखें लाल होना, तेज बुखार होना (105-107°F), उत्पादन तथा आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी होना, मुँह में छाले होना, लार गिरना समय से उपचार न मिलने की दशा में पशु के खुरों में घाँव बनना जिसकी वजह से पशुओं का लंगड़ाकर चलना आदि लक्षणों के आधार पर मुखपका खुरपका रोग की पहचान की जा सकती है। रोग के लक्षण पता चलते ही रोगी पशुओं को अन्य स्वस्थ पशुओं से तत्काल अलग कर दें। निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार करायें तथा स्वस्थ पशुओं को चारा देने के उपरांत ही अंत में पीड़ित पशुओं को मुलायम हरा चारा दें। तदुपरांत हाथों को लाल दवा से अच्छी तरह साफ करें।
- ❖ इस माह में जानवरों में खासकर भैसों में प्रसव दर अधिक बढ़ जाती है इसको ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ—सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस—पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- ❖ भैंस के 1-4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ / पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते हैं। इसे पटेरा रोग भी कहते हैं। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान — नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते हैं। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- ❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10-15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10-15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- ❖ नवजात पशु की नाल को नए ब्लेड से काटकर उसमें गांठ लगा दें तथा उस पर बीटाडीन या टिंचर लगाना न भूलें।
- ❖ पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते हैं, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।